

## काकभुशुंडि

विष्णु के अवतार, राम काक रूपधारी परम भक्त रूप में प्रसिद्ध है। मानस के अनुसार ये शाश्वत है। काकभुशुंडि अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण थे, किंतु लोमश मुनि के शाप से कौए की योनि में आ गये। वे प्रकांड ज्ञानी थे। काकभुशुंडि राम के बाल रूप के उपासक थे। ऐसी प्रसिद्ध है कि एक बार राम अपने आँगन में खेल रहे थे तो काकभुशुंडि उनके हाथ से पुए (रोटी) का टुकड़ा लेकर भागे। राम की प्रेरणा से गरुड ने काकभुशुंडि का पीछा किया। गरुड के पीछा करने से काकभुशुंडि घायल हुए। उन्हें तीनों लोकों में कहीं त्राण (रक्षा) न मिला। अंत में राम ने काकभुशुंडि की रक्षा की। तुलसी के रामचरितमानस में काकभुशुंडि ही राम कथा के वक्ता हैं। शंकर ने हंस का रूप धारण कर काकभुशुंडि से रामायण सुनी थी।

(मानस बालकांड)